डॉ. गणेश त्रिपाठी

बाधक ग्रह का शास्त्रीय एवं प्रामाणिक विश्लेषण

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म कुंडली में कुछ ऐसे स्थान होते हैं तथा कुछ ऐसे ग्रह होते हैं जो जातक के जीवन में अनेक प्रकार की परेशानियों को उत्पन्न करते हैं तथा जातक के जीवन के प्रमुख विषयों में बाधा उत्पन्न करते हैं जिसके कारण जातक उन्नति नहीं प्राप्त कर पाता है। जो ग्रह या भाव जातक के जीवन में द्वादश भाव जनित फलों में बाधा उत्पन्न करते हैं ऐसे ग्रहों को ज्योतिष शास्त्र में बाधक ग्रह के रूप में माना जाता है। यदि जन्मकुण्डली में बाधक ग्रह हो तो जातक जीवन भर बाधाओं परेशानियों से घिरा रहता है।

बाधक ग्रह को लेकर ज्योतिर्विदों के मध्य भी अनेक प्रकार की विसंगति दिखाई देती है किन्तु उनमें स्पष्टता एवं प्रामाणिकता का अभाव रहता है। कुछ ज्योतिषी ऐसा मानते हैं कि चर लग्न में एकादश स्थान या एकादशेश बाधक होता है। स्थिर लग्न में नवम स्थान या नवमेश बाधक होता है तथा द्विस्वभाव लग्नों में सप्तम स्थान या सप्तमेश बाधक होता है किन्तु वास्तविक स्थिति इससे कुछ भिन्न होती है। चर लग्न में एकादश भाव, स्थिर लग्न में नवम भाव तथा द्विस्वभाव लग्न में सप्तम भाव तो बाधक होते हैं किन्तु कुछ अन्य परिस्थितियां साथ हो तो। चरादि लग्नों में एकादशेश, नवमेश तथा सप्तमेश को सर्वदा बाधकेश नहीं कहा जा सकता है। बाधकेश होने के लिए उनमें कुछ बाधा उत्पन्न करने वाले कारक तत्व अवश्य होने चाहिए। कुछ विषम परिस्थिति होने पर ही चरादि लग्नों में एकादशेश, नवमेश तथा सप्तमेश को बाधकेश कहा जाता है। बाधक ग्रह का प्रामाणिक विवरण ज्योतिष शास्त्र के कतिपय ग्रन्थों में ही पाया जाता है। वैद्यनाथ विरचित जातक पारिजात के द्वितीय अध्याय में इस बात का प्रामाणिक सन्दर्भ प्राप्त होता है। जैसा कि वैद्यनाथ कहते हैं –

क्रमात् चरागद्विशरीरभानामुपान्त्यधर्मस्मरगाः तदीशाः।

खारे शमान्दिस्थितराशिनाथाः ह्यतीवबाधाकरखेचराः स्युः ।।

ग्रहों में बाधकत्व होनें के लिए 3 प्रमुख स्थितियां होनी चाहिए। इन तीन स्थितियों में ही बाधक दोष उत्पन्न होता है। इससे पृथक् अवस्थाओं में बिल्कुल भी नहीं होता है।

1. वैद्यनाथ कहते हैं कि चर लग्नों में (मेष, कर्क, तुला, मकर) एकादश स्थान में स्थित ग्रह ही बाधक होता है। स्थिर लग्नों में (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ) नवम भाव में स्थित कोई भी ग्रह हो तो वह बाधक ग्रह कहलाता है। द्विस्वभाव लग्नों में (मिथुन, कन्या, धनु, मीन) सप्तम भाव में कोई भी ग्रह हो तो वह बाधक ग्रह कहलाता है। उक्त लग्नों में उक्त भावों में जितने भी ग्रह हो वे सभी बाधक ग्रह कहलाते हैं। इनकी स्थिति होनें पर ही उक्त भावस्थ ग्रह बाधक ग्रह कहलाते हैं। जिस भाव में बाधक ग्रह होते हैं विशेषकर उस भाव से सम्बन्धित या उस ग्रह के गुण तथा भावाधिपति से सम्बन्धित बाधा उत्पन्न करते हैं।

प्रथम चक्र में मिथुन लग्न है जो द्विस्वभाव लग्न माना जाता है। अतः

मिथुन लग्न (द्विस्वभाव लग्न)

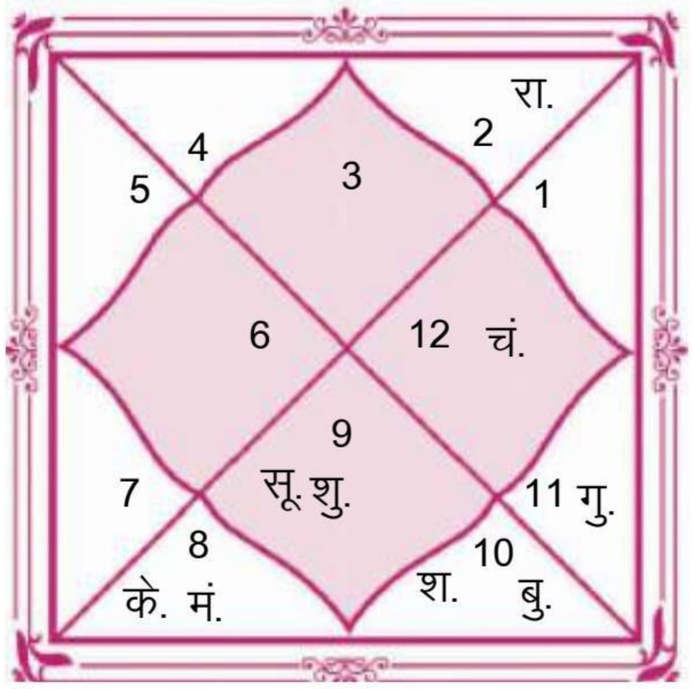

सप्तम स्थान बाधक माना जाएगा। इस सप्तम स्थान में सूर्य और शुक्र है। अतः ये दोनों ग्रह बाधक मानें जाएंगे। बाधक ग्रह होने के कारण जातक अपने जीवन में वैवाहिक सुख को प्राप्त नहीं कर सकेगा।

द्वितीय चक्र में कर्क राशि है जो चर लग्न माना जाता है। चर लग्न में

कर्क लग्न (चर लग्न)

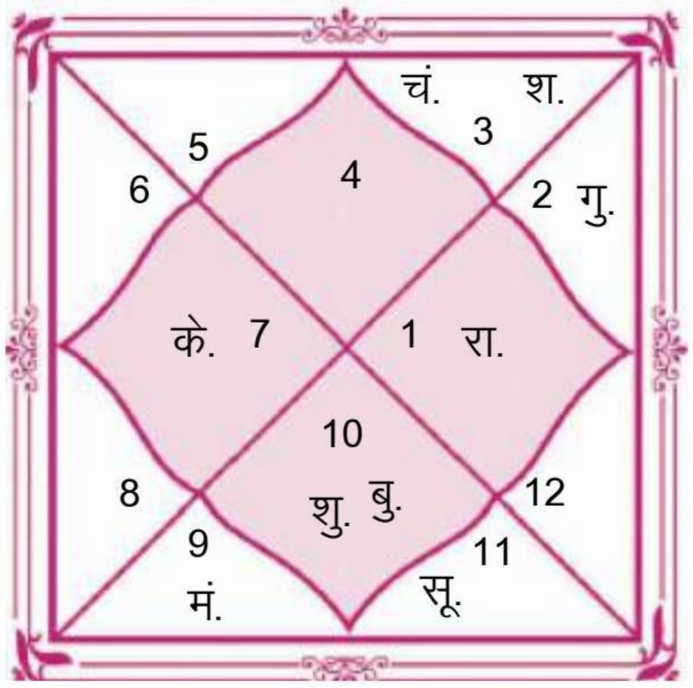

एकादश स्थान बाधक होता है। उक्त कुंडली में एकादश स्थान में बृहस्पति है। अतः जातक आय के क्षेत्र में जीवन भर परेशान रहेगा। बृहस्पति ग्रह बाधक होने के कारण जीवन में सुख एवं ज्ञान में हमेशा बाधा उत्पन्न करता रहेगा ।

2. चरादि लग्नों में एकादश, नवम तथा सप्तम स्थान में यदि कोई भी ग्रह ना हो तो उन भावों के स्वामी कुछ परिस्थिति में बाधकेश कहे जाते हैं सर्वदा नहीं। यदि चरादि लग्नों में एकादशेशादि स्वयं खरेश हो तो ही वे बाधकेश कहे जाते हैं। जन्मकुण्डली के अनुसार बाईसवें द्रेष्काण का स्वामी खरेश कहलाता है। प्रत्येक लग्न में तीन द्रेष्काण होते हैं अतः अष्टम भाव का प्रथम द्रेष्काणेश खरेश कहलाता है अर्थात् द्रेष्काण कुण्डली में अष्टम भाव में जो राशि हो उसका स्वामी खरेश कहलाता है। चर लग्न में एकादशेश, स्थिर लग्न में नवमेश, द्विस्वभाव लग्न में सप्तमेश जो भी ग्रह हो वह ग्रह यदि खरेश भी हो तो ही बाधकेश कहलाता है ।

प्रदत्त कुण्डली में वृष लग्न है जो स्थिर लग्न माना जाता है तथा नवम भाव में कोई ग्रह नहीं है। द्रेष्काण चक्र में अष्टमेश शनि है। नवमेश शनि खरेश होने के कारण

वृष लग्न (स्थिर लग्न)

द्रेष्काण चक्र

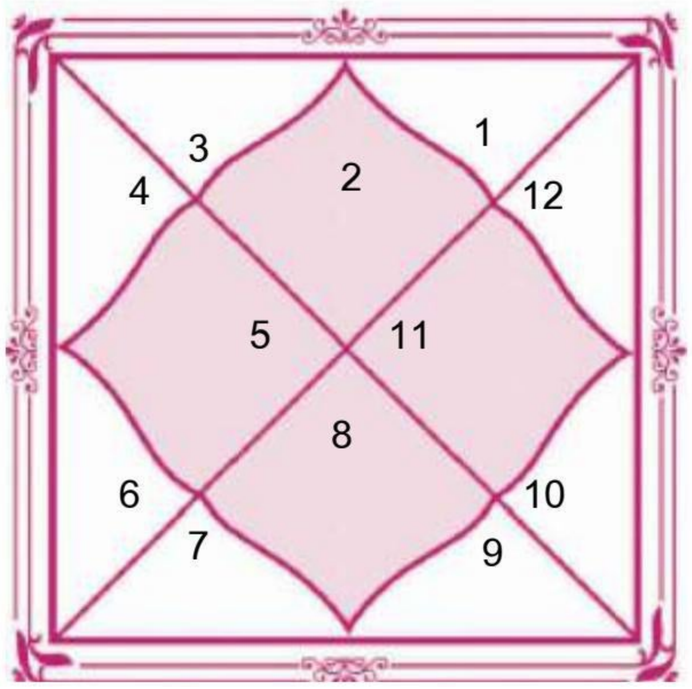

द्रेष्काण चक्र

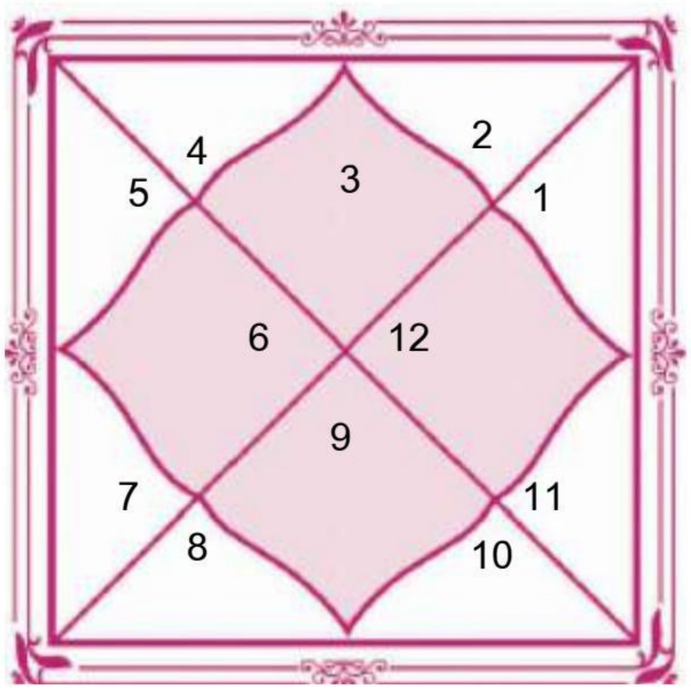

बाधकेश बन रहा है। अतः जातक के जीवन में भाग्य से सम्बन्धित बाधाएं उपस्थित होते रहेंगी। जिसके कारण जातक जीवन में उन्नति को प्राप्त नहीं करेगा। भाग्य का पक्ष हमेशा कमजोर ही रहेगा।

3. यदि चरादि लग्नों में एकादशेशादि भावेश खरेश ना हो तो तीसरी स्थिति लागू होती है। यदि चरादि लग्नों में एकादशेशादि ग्रह स्वयं गुलिक स्थान के स्वामी भी हो तो ही वह ग्रह बाधकेश माना जाता है।

प्रस्तुत चक्र में मेष लग्न है। अतः एकादश स्थान बाधक स्थान हुआ। एकादशेश शुक्र गुलिक का स्वामी होने के कारण बाधकेश हुआ। क्योंकि गुलिकादि उपग्रह बोधक चक्र में गुलिक शुक्र की राशि में बैठा

मेष लग्न (चर लग्न)

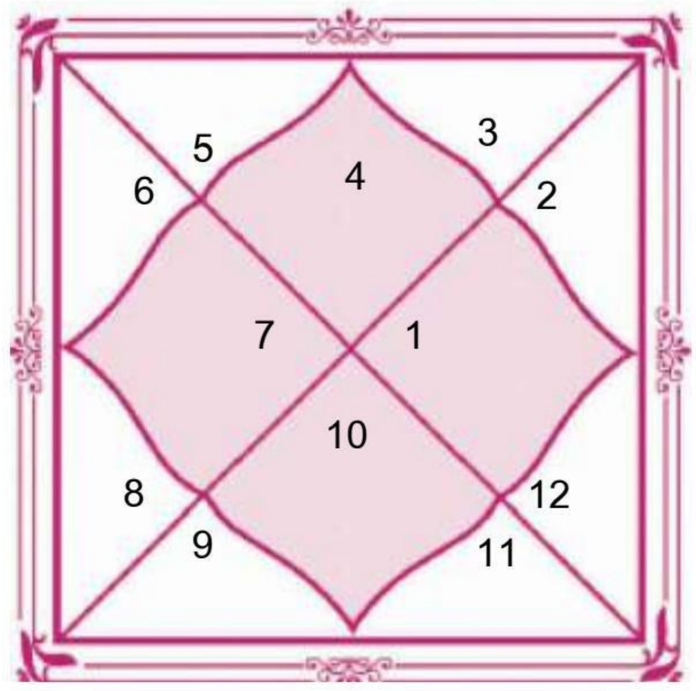

गुलिकादि उपग्रह बोधक चक्र

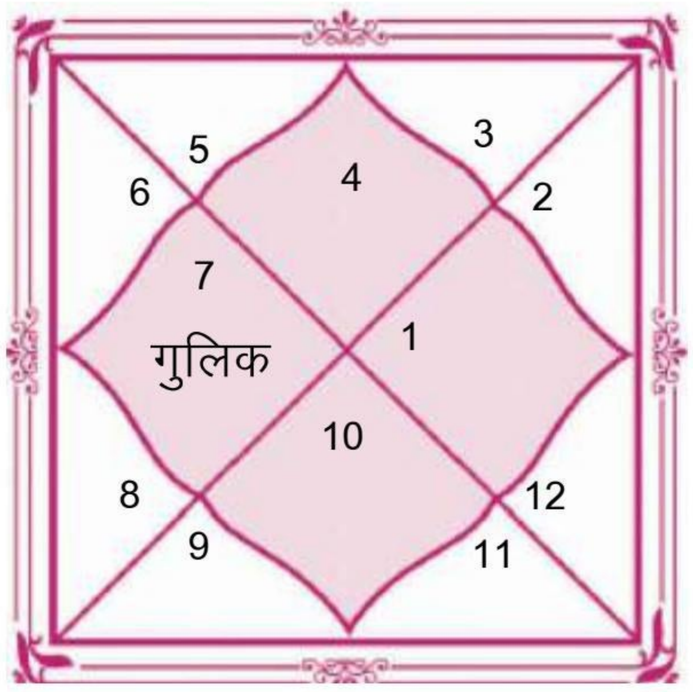

है। अतः गुलिकेश शुक्र हुआ। कर्क लग्न में एकादशेश शुक्र गुलिकेश होनें के कारण बाधकेश ग्रह के रूप में परिवर्तित हुआ। एकादश स्थान मुख्यतः आय, रोजगार, संसाधन, स्रोत इत्यादि का होता है। अतः इन सभी से जातक जीवन भर परेशान रहेगा।

पूर्व कथित तीनों परिस्थितियों के अतिरिक्त किसी भी परिस्थिति में बाधक ग्रह नहीं माना जाना चाहिए। कुछ लोग हमेशा चर लग्नों में एकादशेश को बाधक मानते हैं किन्तु यह सत्य नहीं है। कुछ दैवज्ञ ऐसा भी कहते हैं कि यदि बाधकेश बाधक भाव में हो तो वह बाधकेश नहीं माना जाता है किन्तु इसका प्रमाण प्राप्त नहीं होता है। ❐

दूरभाष : 9795888771